नागार्जुन

Mandip Kumar Chaurasiya

Assistant professor(Guest)

Dept. Of A.I.H. & Archaeology

Patna University,Patna-800005

M.A. Semester-IV

Paper –104 (2) History of Indian Buddhism (E.C.)

नागार्जुन भारतीय बौद्ध भिक्षु-दार्शनिक और माध्यमिक (मध्य मार्ग) मत के संस्थापक थे। जिनकी शून्यता की अवधारणा के स्पष्टीकरण को उच्चकोटि की बौद्धिक एवं अध्यात्मिक उपलब्धि माना जाता है। नागार्जुन माध्यमिक दर्शन के प्रतिष्ठापक और महायान बौद्ध दर्शन के प्रमुख आचार्य थे। भगवान बुद्ध ने शाश्वत और उच्छेद, सत् और असत्, भाव और अभाव इन दो अन्तों के बीच चलने का उपदेश दिया था। नागार्जुन ने तथागत द्वारा उपदिष्ट इस मध्यम मार्ग की दार्शनिक व्याख्या प्रस्तुत की और बौद्ध परम्परा में प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धांत का दार्शनिक विश्लेषण प्रस्तुत कर जगत को सापेक्ष, फलतः अनुत्पन्न, निःश्वभाव शून्य बताते हुए शून्यता के सिद्धांत को शास्त्रीय दृष्टि से प्रस्तुत किया।

नागार्जुन (बौद्धदर्शन) शून्यवाद के प्रतिष्ठापक तथा माध्यमिक मत के प्रख्यात बौद्ध आचार्य थे। नागार्जुन सातवाहन राजा यज्ञश्री गौतमीपुत्र (166-196 ई.) के समकालिक और मित्र थे। वे एक अति उच्च व्यक्तित्व के बौद्ध दार्शनिक थे। बौद्ध दर्शन के इतिहास में उन्होंने बौद्ध दर्शन के माध्यमिक संप्रदाय का प्रवर्तन किया, जो शून्यवाद भी कहलाता है। नागार्जुन के समान तार्किक विश्व-इतिहास में कोई दूसरा नहीं हुआ। उनका महान दार्शनिक ग्रंथ माध्यमिककारिका या माध्यमिक-शास्त्र है, जिसमें 27 परिच्छेदों में 400 कारिकाएं हैं। यह उनके दर्शन का आधारभूत ग्रंथ है। महायान-सूत्रों में निहित उपदेशों का इस ग्रंथ में संक्षेप किया गया है। इसमें ऊंची दार्शनिक उड़ान और लेखक की तर्क-विद्या में सूक्ष्म अंतर्दृष्टि का परिचय मिलता है। इस एक ग्रंथ से पता लग जाता है कि नागार्जुन कितने महान मेधावी पुरुष थे और किस प्रकार वे हमारे अतीत और वर्तमान के चिंतकों में सबसे अधिक तेज के साथ चमकते हैं।

नागार्जुन की जीवनी के अनुसार, जिसका अनुवाद चीनी भाषा में कुमारजीव ने सन् 405 ई. में किया, उनका जन्म दक्षिण-भारत में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। युआन-च्वांग का कहना है कि उनका जन्म दक्षिण कोशल या प्राचीन विदर्भ (बरार) में हुआ था। नागार्जुन ने संपूर्ण त्रिपिटक का 90 दिन में अध्ययन कर लिया, परंतु इससे उनको संतोष नहीं हुआ। हिमालय के निवासी एक अत्यंत वृद्ध भिक्षु से उन्हे महायान-सूत्र प्राप्त हुए, परंतु उनके

जीवन का अधिकांश समय दक्षिण-भारत के श्रीपर्वत या श्रीशैलम् में बीता, जिसे उन्होंने बौद्ध धर्म के प्रचार का एक अद्वितीय केंद्र बना दिया। तिब्बती वर्णनों का कहना है कि नागार्जुन कुछ दिन नालंदा में भी रहे। युआन-च्वांग ने संसार को प्रकाशित करने वाले चार सूर्यों का उल्लेख किया है। उनमें एक नागार्जुन थे। शेष तीन थे - अश्वघोष, कुमारलब्ध (कुमारलात) और आर्यदेव। नि:संदेह, एक विचारक के रूप में, नागार्जुन की भारतीय दर्शन के इतिहास में तुलना करने वाला कोई दूसरा नहीं है। टी. वाटर्स ने नागार्जुन को ठीक ही 'उत्तरकालीन बौद्धधर्म का एक महान आश्चर्य और रहस्य' कहा है।

चीनी अनुवादों में प्राप्त करीब बीस रचनाएं नागार्जुन-कृत बताई जाती हैं। उनमें से 18 का उल्लेख बुनियु नंजियों ने अपनी पुस्तक-सूची में नागार्जुन-कृत रचनाओं के रूप में किया है। जैसा हम अभी निर्देश कर चुके हैं। नागार्जुन की प्रमुख रचना माध्यमिककारिका या माध्यमिक-शास्त्र है। नागार्जुन ने स्वयं इस ग्रंथ की व्याख्या की, जो 'अकुतोभया' के नाम से प्रसिद्ध है। यहां नागार्जुन की एक अन्य कृति का और निर्देश कर देना चाहिए और वह है 'सुह्रल्लेख', जिसे उन्होंन एक पत्र के रूप में अपने मित्र यज्ञश्री गौतमीपुत्र को लिखा। इ-त्सिंग ने अपनी भारत-यात्रा के समय इस प्रभूत नैतिक महत्व वाली रचना को बालकों के द्वारा कंठस्थ किए जाते और वयस्कों के द्वारा जीवन-पर्यत अनुशीलन किए जाते देखा था। यह रचना हमें असंदिग्ध रूप से बताती है कि नागार्जुन ध्वंसात्मक विचारक मात्र न थे, बल्कि नीति और सदाचार का

उनके दर्शन में भी उतना ही महत्वपूर्ण स्थान है जितना अन्य किसी दार्शनिक नय में।

नागार्जुन द्वारा प्रतिपादित शून्यवाद के मुख्य व्याख्याकारों में यहां स्थविर बुद्धपालित और भाववविवेक (या भव्य) का नामोल्लेख करना आवश्यक होगा। ये दोनों विचारक पांचवीं शताब्दी ईसवी में आविर्भूत हुए और बौद्ध दर्शन के इतिहास में उनका विशेष महत्व इस कारण हैं कि उन्होंने तर्क के क्रमश: 'प्रासंगिक' और 'स्वातंत्र' संप्रदायों की स्थापना की। आर्यदेव, शांतिदेव, शांतरक्षित और कमलशील माध्यमिक संप्रदाय के अन्य प्रसिद्ध विचारक हैं।